वर्ष : 1, अंक : 3

अप्रैल-जून 2017

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी

(भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार और संवर्धन को समर्पित संस्था)

हिन्दुस्तानी भाषा भारती

त्रैमासिक पत्रिका

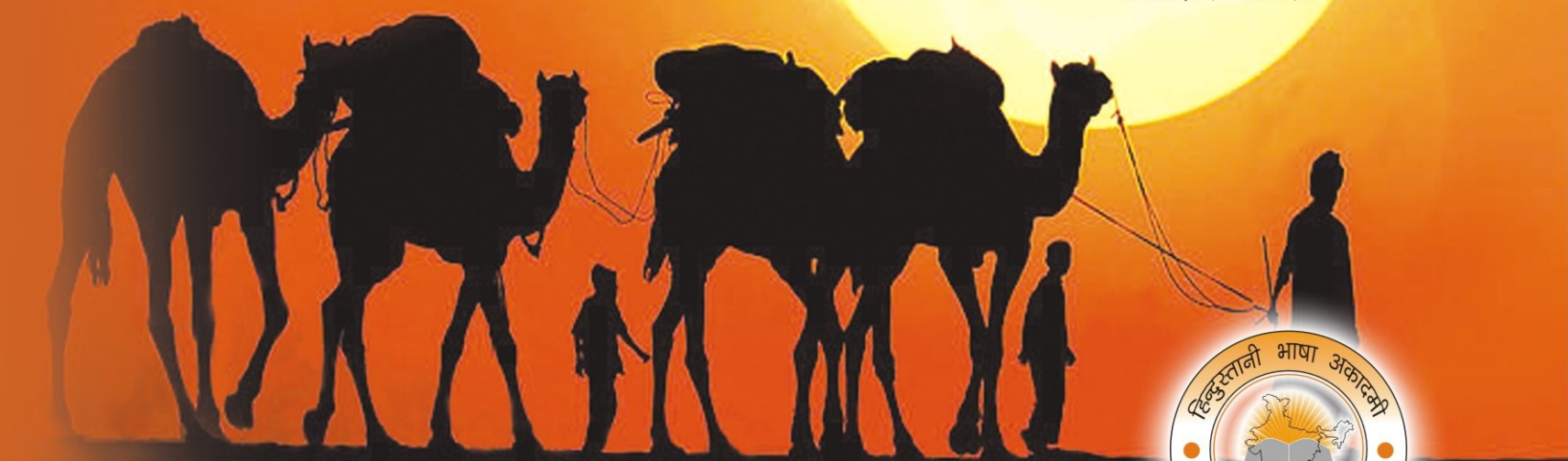

विशेष :

राजस्थानी भाषा और उसका समकालीन साहित्य

वर्ष : 1, अंक : 3

हिन्दुस्तानी भाषा भारती

मूल्य : 30 रुपये

(भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार और संवर्धन को समर्पित संस्था)

सुधाकर पाठक
सम्पादक एवं अध्यक्ष, हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी

सागर समीप
सह सम्पादक

बृजेश द्विवेदी
प्रवक्ता

अमरनाथ गिरि
कानूनी सलाहकार

सम्पादकीय सहयोग
गीता पंडित
विजय कुमार शर्मा
नीरज दुबे

कार्यालय :
हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी
3675, राजा पार्क, रानी बाग, दिल्ली-110034
ई-मेल : hindustanibhashabharati@gmail.com
वेबसाइट : www.hindustanibhashaakadami.com
सम्पर्क सूत्र : 09873556781, 09968097816

- पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों के अपने विचार हैं। प्रकाशक का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- सभी विवादों का निपटारा दिल्ली/नई दिल्ली की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों और फोरमों में ही किया जाएगा।
- सम्पादन एवं संचालन पूर्णत: अवैतनिक और अव्यावसायिक है।

स्वामी हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी ट्रस्ट, प्रकाशक व मुद्रक सुधाकर बाबू पाठक द्वारा 3675, राजा पार्क, रानीबाग, दिल्ली-110034 से प्रकाशित और सन्नी प्रिन्टर्स, बी-234, नारायणा इन्डस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110028 से मुद्रित।

विषय सूची

अतिथि सम्पादक की कलम से	02
सम्पादकीय	03
हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के मुख्य उद्देश्य	04
साक्षात्कार : डॉ. कमल किशोर गोयनका	05
हिन्दी सेवी संस्था : दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन	09
साक्षात्कार : अध्यक्ष, दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन	10
भारत की शिक्षा नीति और राजभाषा नीति	13
सार्वभौमिक राष्ट्र है तो उसकी अपनी राष्ट्रभाषा भी होगी	15
हिन्दुस्तानी भाषा साहित्य समीक्षा सम्मान से सम्मानित समीक्षा	16
राजस्थानी भाषा और उसका समकालीन साहित्य	18
संस्कृति और भाषा	22
राष्ट्रीय भाषा हिन्दी की राष्ट्रव्यापी लोकप्रियता का विवेचन	24
भाषा के संदर्भ में महात्मा गांधी जी के विचार	28
मातृभाषा हमारी पहचान	30
हिन्दी गजल का संक्षिप्त इतिहास	32
पुस्तक समीक्षा : कविता संग्रह 'मुट्ठी भर धूप'	34
आठवीं अनुसूची है या भारतीय रेल का अनारक्षित डिब्बा	36
हिन्दी में विज्ञान साहित्य की उपलब्धता और पाठ्यक्रम	37
अनुदित पंजाबी कविता	41
पूर्वोत्तर भारत का भाषाई परिदृश्य और हिन्दी की स्थिति	42
अकादमी की साहित्यिक गतिविधियां	44
आगामी आयोजन : प्रथम हिन्दुस्तानी भाषा काव्य प्रतिभा सम्मान	45
आगामी आयोजन : द्वितीय हिन्दुस्तानी भाषा साहित्य समीक्षा सम्मान	46
अकादमी कार्यसमिति की त्रैमासिक बैठक का आयोजन	47

सम्पादकीय

मेरी कलम से...

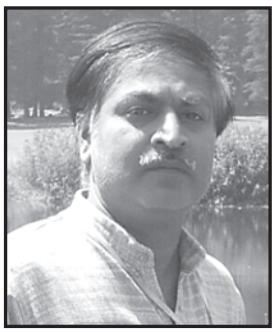

डॉ. रमेश तिवारी
अतिथि सम्पादक

हिन्दुस्तानी भाषा भारती का यह नवीनतम अंक आप सबकी सेवा में सहर्ष प्रस्तुत है द्य भारतीय भाषाओँ के संरक्षण-संवर्धन के निमित्त अस्तित्वमान हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी की यह पत्रिका अपने सदस्यों-शुभेच्छुओं और पाठकों के सहयोग से निरंतर विकास की ओर अग्रसर है द्य हमें खुशी है कि लगभग सभी सदस्यों-शुभेच्छुओं ने एक स्वर में हमारी कोशिशों से सहमति जताते हमें निरंतर अपना सक्रिय सहयोग देकर निरंतर प्रोत्साहित किया है द्य हम ऐसे सहयात्रियों के प्रति हृदयतल की गहराइयों से आभार व्यक्त करते हैं द्य इस अंक में हमने हमारे समय के दो महत्त्वपूर्ण शख्सियतों के विचारों को साक्षात्कार के अंतर्गत प्रकाशित किया है द्य डॉ. कमल किशोर गोयनका और श्री महेश चन्द्र शर्मा दोनों ही ऐसे प्रमुख हिंदीसेवी हैं जिन्होंने अपना अब तक का पूरा जीवन ही हिंदी भाषा और साहित्य के संरक्षण-संवर्धन के लिए समर्पित किया है द्य डॉ. रवि शर्मा 'मधुप' के सहयोग से हमने हिन्दीप्रेमी पाठकों के लिए इन दोनों विशिष्ट हस्तियों से बातचीत करने में सफलता प्राप्त की और उनके विचारों को आप सुधीजनों तक पहुँचाने की योजना को साकार करने में सफलता हासिल की है द्य डॉ. कमल किशोर गोयनका जी ने इस साक्षात्कार में बोलियों और हिंदी भाषा के परस्पर रिश्ते, संविधान की आठवीं अनुसूची और बोली-भाषा के परस्पर रिश्तों, हिंदी भाषा के स्वरूप को विकृत करने की साजिशों, राजभाषा सम्बन्धी अधिनियमों की शक्ति और सीमाएँ, त्रिभाषा सूत्र के क्रियान्वयन की खामियाँ और उनसे होने वाली परेशानियाँ, हिंदी के बारे में गांधी जी के विचार और उनकी प्रासंगिकता, गांधी जी की दृष्टि में हिंदी का हिन्दुस्तानी स्वरूप, हिंदी एवं अन्य भारतीय बोलियों-भाषाओँ के हित में केंद्रीय हिंदी संस्थान की भूमिका, हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने की कोशिशें और उनके मार्ग में में आने वाली समस्याएँ, वर्तमान सरकार का हिंदी के प्रति रुख, अंग्रेजी के विस्तार के प्रति सरकारी रुख से हिंदी के विकास में आने वाली समस्याएँ, विभिन्न राज्यों में स्थापित हिंदी अकादमियों की कार्यप्रणाली एवं उनकी प्रासंगिकता, गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग एवं अन्य मंत्रालयों की हिंदी सलाहकार समितियों की भूमिका, हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के कार्य, कार्य-प्रणाली और इसकी प्रासंगिकता आदि सवालों पर विस्तृत बातचीत करते हुए अत्यंत विस्तार से अपना मत रखा है द्य इन विचारों से सजग-सुधी पाठक सहमत-असहमत हो सकते हैं द्य हमारी यही कोशिश है कि इन सवालों पर विचार-विमर्श हो, और इन सबके साथ-साथ चिन्तन की एक नयी शुरुआत की जाए जिससे हिंदी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओँ का भी विकास सही दिशा में हो सके द्य दिल्ली हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष श्री महेश चन्द्र शर्मा दिल्ली के पूर्व महापौर भी रहे हैं द्य 80 वर्षों की आयु और युवाओं की-सी फुर्ती इनकी पहचान है द्य

हिंदी भाषा-साहित्य के साथ-साथ राजनीतिक क्षेत्र में भी इनका पुरअसर दखल रहा है द्य वर्तमान परिदृश्य में हिंदी और भारतीय भाषाओँ की स्थिति, राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी की स्वीकार्यता और इसकी समस्याएँ, राजनीतिज्ञों का अंग्रेजी के प्रति अगाध प्रेम, क्षेत्रीय भाषाओँ और राष्ट्रभाषा के मध्य परस्पर निर्भरता और सद्भाव, हिंदी को रोजगारपरक बनाने का उपयुक्त स्वरुप अथवा मॉडल, दिल्ली हिंदी साहित्य सम्मेलन की कार्यप्रणाली और मूल्यांकन, विभिन्न हिंदी सेवी संस्थाओं की हकीकत, हिंदी भाषा के विस्तार के लिए किए जा रहे कार्यों के सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक अन्तर्विरोध इत्यादि कुछ ऐसे अनसुलझे सवाल हैं जिन पर श्री महेश चन्द्र शर्मा जी ने बड़े ही विस्तारपूर्वक अपने विचार रखे हैं द्य इन दोनों साक्षात्कारों को पत्रिका के इस अंक की उपलब्धि कहा जा सकता है द्य हमारी कोशिश है कि हमारे-आपके मन-मस्तिष्क में उठने वाले तमाम सवालों के जवाब इन साक्षात्कारों में उपलब्ध कराये जा सकें जिनकी एक सजग नागरिक और सक्रिय देशवासी को जानकारी होना अपेक्षित है द्य

किसी भी देश की संस्कृति उसकी पहचान होती है द्य संस्कृति और भाषा का रिश्ता भी अभिन्न होता हैद्य डॉ. वेदप्रताप वैदिक ने 'संस्कृति और भाषा' शीर्षक आलेख में इनके अंतर्संबंधों पर बड़ी ही परिपक्वता से विचार किया है द्य इस अंक में हमने डॉ. नीरज दइया के आलेख के अंतर्गत राजस्थानी भाषा और उसका समकालीन साहित्य पर विशेष सामग्री प्रकाशित की है द्य गांधी जी के भाषा संबंधी विचारों पर नीरज दुबे जी का सारगर्भित आलेख भी इस अंक का महत्त्वपूर्ण आकर्षण है द्य इसके अतिरिक्त हिंदी की राष्ट्रव्यापी लोकप्रियता, 'मातृभाषा हमारी पहचान' विषय पर सुरेखा शर्मा जी का विचारपरक आलेख, हिंदी गजल का संक्षिप्त इतिहास एवं नव छंद विधान ख्र हिंदकी' विषयक डॉ. माणिक विश्वकर्मा नवरंग का आलेख, आठवीं अनुसूची की भूमिका और भारतीय भाषाओँ पर वीरेंद्र परमार जी का एक आलेख इस अंक को पूर्णता प्रदान करते हैं द्य इस पत्रिका में किसी भारतीय भाषा की कविता का हिंदी अनुवाद भी हमारी परंपरा रही है द्य इस अंक में हमने गुजराती कविता के हिंदी अनुवाद को स्थान दिया है द्य हिंदी में विज्ञान साहित्य की उपलब्धता और पाठ्यक्रम विषय पर राहुल खाते जी का आलेख भी इस अंक को एक नया आयाम प्रदान करता है द्य साथ में अन्य स्थायी स्तंभ एवं अकादमी के कार्यक्रमों की जानकारी भी हमेशा की तरह यथास्थान दी गयी है द्य आपके बहुमूल्य सुझावों का भी सदा की तरह स्वागत और प्रतीक्षा है

विशेष सम्पादकीय

संदेश

सुधाकर पाठक
सम्पादक एवं अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष के नाते मुझे आप सबको यह बताते हुए खुशी हो रही है कि आप सबके सहयोग व सुझावों से अकादमी दिन-प्रतिदिन अपने लक्ष्य की तरफ धीरे-धीरे किन्तु विश्वासपूर्वक अग्रसर है । बहुत छोटी से अवधि में भी आपने जिस प्रकार से अकादमी को अपना स्नेह और बहुमूल्य सुझाव दिया और निरंतर मेरे पास आपके सन्देश आते रहते हैं, उन सबसे मुझे और अकादमी के प्रत्येक सदस्य को असीम ऊर्जा प्राप्त होती है । आप सबके इस स्नेह के बल पर ही अकादमी अपनी प्रत्येक गतिविधियों को समय-समय पर सफलतापूर्वक संचालित कर पाती है । आप सबका सहयोग और स्नेह हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी परिवार के प्रति निरंतर यूं ही बना रहे और हम आपसे उर्जा प्राप्त कर निरंतर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रहें, यही अभिलाषा है और शुभकामना भी ।

हमने आरम्भ से ही यह कहा है कि आज जरूरत एक ऐसे मंच की है जहां पर देश की सभी भाषाएं एक-दूसरे का हाथ थामे एक जगह पर खड़ी दिखाई दें । वास्तव में हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी का यह मूल उद्देश्य है जिसके निमित्त इसकी स्थापना की गयी है । इसलिए हम इस उद्देश्य को हमेशा दोहराते रहते हैं । हमारे लिए व्यक्ति हित से अधिक महत्त्वपूर्ण है राष्ट्रहित । राष्ट्रहित में सभी भारतीय भाषाओं के विकास संबंधी स्वप्न को कैसे साकार किया जाए, यही हमारी चिंतनधारा का केंद्रीय बिंदु है । भारतीय भाषाओं के परस्पर विकास एवं समृद्धि के जिन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हमने अकादमी की स्थापना की है उन पर स्थानीय से लेकर राष्ट्रीय स्तर के भाषाविदों, विधायिका, कार्यपालिका आदि में पदासीन उच्च पदाधिकारियों से संवादों के जरिए हमारी कोशिश निरंतर जारी है । इस दिशा में हमें भारतवर्ष के अधिसंख्य भाषाविदों का सान्निध्य और सहयोग मिल रहा है । हमारी कोशिश है कि हम सभी विद्वानों के साथ संवाद बनाये रखते हुए उनके उल्लेखनीय विचारों को आप तक और हर उस व्यक्ति तक पहुंचाएँ जिसकी इन विषयों में रुचि है । हमारा प्रयास सदा से ही यह रहा है कि हिंदी के साथ-साथ समस्त भारतीय भाषाओं के बीच परस्पर निर्भरता और आवाजाही का वातावरण निर्मित हो । जिस दिन ऐसा हो सकेगा हम समझेंगे कि हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी का स्वप्न साकार हो गया है ।

सभी भारतीय भाषाओं की समृद्धि और विकास के साथ-साथ एक राष्ट्रभाषा हो, राष्ट्रभाषा की राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार्यता हो, और उसे संपर्क भाषा के रूप में आधिकारिक मान्यता दिलाने के लिए जो भी भरसक प्रयास हो सकते हैं, वे सब भी अकादमी की प्राथमिकता में हैं । इस सन्दर्भ में संवैधानिक अड़चनों के मुद्दे पर संबद्ध पक्षों से संवाद एवं सभी प्रकार की समस्याओं के निराकरण के लिए भी अकादमी कटिबद्ध है और जो भी हमसे बन सकेगा अथवा जो भी जिम्मेदारी मिलेगी, उसका पूरी श्रद्धा और निष्ठा से निर्वहन किया जाएगा ताकि जल्द से जल्द हम अकादमी के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल हो सकें । माना कि यह काम एक दिन में होने वाला नहीं है किन्तु हम भी इसे एक दिन का काम नहीं मान रहे हैं । हमें ज्ञात है कि रास्ता मुश्किल और लक्ष्य दूर है किन्तु यदि हमें अपने भारतीय भाषाओं की समृद्धि और विकास के स्वप्न को साकार करना है तो यही एक रास्ता है और हमें इस रास्ते पर आप सबके सहयोग से निरंतर चलते जाना है, तभी हम लक्ष्य प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं ।

हमें समय के साथ चलते हुए अपनी भाषाई विरासत को भी साथ लिए चलने की दोहरी जिम्मेदारियों को निभाना है । अपनी पहचान और विरासत को संभाले रखना ही प्रत्येक भारतवासी का कर्तव्य है । हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी इन सभी मुद्दों पर पूरी निष्ठा और समर्पण भाव से अपने सभी सदस्यों और शुभचिंतकों के सहयोग से इस जिम्मेदारी के निर्वहन में लगी हुई है । और हमें पूरा भरोसा है कि अपने सीमित संसाधनों के बावजूद अपने हौसलों के बल पर हम ये उड़ान मंजिल तक हर हाल में लेकर जाएँगे ।

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के मुख्य उद्देश्य

- हिन्दी की सम्पूर्ण भारत में सम्पर्क भाषा के रूप में स्वीकार्यता और क्षेत्रीय भाषाओं के अधिकार को लेकर चेतनात्मक कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- हिन्दी समेत देश की विभिन्न बोलियों का परिरक्षण, संवर्धन और विकास करना, जिससे हिन्दुस्तानी साहित्य और समृद्ध हो सके।
- ज्ञान की विभिन्न शाखाओं से सम्बद्ध भारत तथा विश्व की विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध सामग्री का मानक हिन्दी अनुवाद की व्यवस्था।
- सृजनात्मक साहित्य को प्रोत्साहन एवं उसका प्रकाशन।
- हिन्दी सहित सभी भारतीय भाषाओं के सन्दर्भ ग्रन्थ बनाना और उनका प्रकाशन।
- साहित्यकारों, लेखकों, कवियों, अनुवादकों, वैज्ञानिकों तथा कलाकारों का सम्मान करना।
- हिन्दी समेत सभी भारतीय भाषाओं पर अकादमिक व्याख्यानमाला का आयोजन करना।
- हिन्दुस्तानी साहित्य के प्रसार और प्रचार के लिए वार्षिक सम्मेलन का आयोजन करना।
- हिन्दी साहित्य के वैज्ञानिक स्वरूप को वैश्विक स्तर पर ख्याति दिलाने हेतु विश्व की भाषाओं में समकालीन हिन्दी साहित्य के अनुवाद तथा अन्य भारतीय भाषाओं से हिन्दी में शब्द ग्रहण तंत्र का निर्माण।
- हिन्दुस्तानी भाषाओं के मानकीकरण के लिए कार्यशाला का आयोजन ।
- हिन्दुस्तानी भाषाओं और संस्कृति को प्रोत्साहित करने वाले विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- भारतीय भाषाओं के प्रोत्साहन हेतु पत्रिका, समाचार पत्रों व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का संचालन करना।
- राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संगठन का निर्माण व विस्तार ।
- उत्तर भारत के विभिन्न प्रदेशों में प्रयोग होने वाले हिन्दी शब्दों के मानकीकरण द्वारा इसकी समकालीन उपयोगिता को स्थापित करने का प्रयास। इस हेतु ज्ञान की नवीनतम शाखाओं हेतु मानक शब्दकोशों का निर्माण।
- मुद्रण लेखन में मानक देवनागरी के प्रयोग का प्रचार-प्रसार और हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषाओं के नवीनतम संचार, तकनीक एवं उपकरणों में प्रयोग की दिशा में तकनीकविदों के साथ मिलकर कार्य करना।
- हिन्दी साहित्य और समालोचना को राजनीतिक खेमेबाजी से उबार कर सार्वभौमिक संवाद की ओर ले जाना।
- देशज बोलियों और विधाओं को प्रोत्साहित करना।

साक्षात्कार : डॉ. कमल किशोर गोयनका

भाषा जोड़ने का काम करती है, तोड़ने का नहीं

डॉ. रवि शर्मा 'मधुप'

डॉ. कमल किशोर गोयनका का नाम मुंशी प्रेमचंद का पर्यायवाची हो गया है। हिंदी के 'उपन्यास सम्राट', 'कलम के सिपाही' आदि उपाधियों से विभूषित प्रख्यात कथाकार मुंशी प्रेमचंद के जीवन और साहित्य पर अपने शोध कार्य के लिए डॉ. गोयनका विश्व विख्यात हैं। इसके अतिरिक्त महात्मा गाँधी, पत्रकारिता, प्रवासी साहित्य, हिंदी भाषा आदि अनेक विषयों पर गहरी पकड़ रखने वाले डॉ. कमल किशोर गोयनका दिल्ली विश्वविद्यालय के जाकिर हुसैन कॉलेज से हिंदी के वरिष्ठ रीडर के रूप में सेवानिवृत्त होने के बाद निरंतर स्वतंत्र लेखन कर रहे हैं। संप्रति वे केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के उपाध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे हैं। पेश है डॉ. गोयनका से प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. रवि शर्मा 'मधुप' की भाषा विषयक लंबी बातचीत के मुख्य अंश–

प्रश्न : डॉक्टर साहब, हिंदी 17 बोलियों का समूह है। इन 17 में से एक बोली मैथिली को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची के अंतर्गत भाषा का दर्जा दे दिया गया है। इसी प्रकार अन्य बोलियों द्वारा भी उन्हें भाषा का दर्जा दिए जाने की मांग जोर पकड़ रही है। भोजपुरी और राजस्थानी को लेकर तो बाकायदा आंदोलन चल रहा है। ऐसे में आप भविष्य में हिंदी की कैसी स्थिति देखते हैं?

उत्तर : यह हिंदी को कमजोर करने की एक चाल है। अगर ऐसे ही चलता रहा तो एक दिन ऐसा आएगा जब हिंदी की हर बोली भाषा के पद पर बैठ जाएगी, तो आप ही बताइए, क्या हिंदी बहुसंख्यक लोगों की भाषा बनी रहेगी? क्या हिंदी का विश्व में पहला स्थान बना रहेगा? क्या हिंदी का अस्तित्व समाप्त नहीं हो जाएगा? ये सभी प्रश्न आपके प्रश्न से जुड़ते हैं। इसका सीधा मतलब यह है कि हिंदी का भविष्य अंधकारमय हो जाएगा। कल्पना कीजिए, हिंदी में से तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, रहीम, कबीर, पद्माकर, देव, केशव आदि को निकाल दिया जाए, तो हिंदी साहित्य में क्या बचेगा? मैथिली को अलग भाषा का दर्जा दिए जाने के बाद क्या मैथिल कोकिल कहे जाने वाले विद्यापति हिंदी के कवि माने जाएंगे या मैथिली भाषा के?

प्रश्न : डॉ. साहब क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि हिंदी की बोलियाँ ही उसकी ताकत हैं? यदि हम हिंदी की बोलियों को बचाएंगे, तो उससे हिंदी मजबूत होगी? किंतु क्या हिंदी की बोलियों को बचाने का एकमात्र तरीका उन्हें संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करना ही है?

उत्तर : रवि जी, मैं आपकी बात से पूरी तरह सहमत हूं। हिंदी की ताकत उसकी बोलियां हैं और हिंदी को बचाने का सबसे बढ़िया तरीका उसकी बोलियों को बचाना है। इसमें किसी को कोई संशय नहीं होना चाहिए। मगर जैसा आपने कहा, हिंदी की बोलियों को बचाने का एकमात्र तरीका उन्हें आठवीं अनुसूची में शामिल करना नहीं है, बल्कि उन्हें अपने घर, अपने परिवार, अपने रिश्ते-नाते, अपने सगे-संबंधियों के साथ प्रयोग करके बचाने की आवश्यकता है। इन बोलियों में बहुत महत्त्वपूर्ण लोकसाहित्य छिपा है, जो लोक गीतों, लोक कथाओं, लोक नाटकों के रूप में है। आज आवश्यकता है उस लोक साहित्य को बचाने की, उसे अगली पीढ़ी को सौंपने की, जो नहीं हो रहा। संविधान की आठवीं अनुसूची में इन्हें भाषा का दर्जा दिलवा देने से, केवल पुरस्कार-अनुदान बांटे जाएंगे। कुछ लोगों को अकादमियों का अध्यक्ष/सचिव आदि बना दिया जाएगा, जैसा कि दिल्ली में कई अकादमियों के साथ हो रहा है। जब तक हम अपने घरों में अपनी बोलियों और प्रादेशिक भाषाओं को नहीं बचाएंगे, तब तक समस्या का समाधान नहीं होगा। आठवीं अनुसूची में उन्हें भाषा का दर्जा दिलवाकर कुछ लोग इन बोलियों को हिंदी के विरुद्ध खड़ा कर रहे हैं, हिंदी का संख्या बल घटा रहे हैं और हिंदी को जाने-अनजाने कमजोर कर रहे हैं। आजादी के 70 साल बाद भी अभी तक हिंदी शिक्षा का माध्यम नहीं बन पाई, कार्यालय के कामकाज की भाषा नहीं बन पाई, ज्ञान-विज्ञान और